# छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास में जल संसाधन की भूमिका

डॉ. श्रीमती अनीता मेश्राम

प्रस्तावना :

प्रकृति से प्राप्त निःशुल्क उपहार में जल एक महत्वर्पूण संसाधन है। इसका प्रयोग मनुष्य अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिये करता है। प्राकृतिक संसाधनों में जल का महत्वपूर्ण स्थान है इससे अर्थिक विकास को प्रोत्साहन मिलता है। जबकि पर्याप्त मात्रा होने पर कृषि एवं उद्योग के क्षेत्रों का विकास भी संभव है। आर्थिक विकास के लिये जल की उपलब्धता ही पर्याप्त नही है बलकि इनका विवेकपूर्ण विदोहन एवं उत्तम तकनीश्ट का प्रयोग करना भी महत्वपूर्ण है। जल संसाधन का कृषि में विशिष्ट महत्व है क्यों कि कृषि योग्य की पूर्ति सीमित है और इसे बनया नही जा सकता। प्रति एकड़ उपज अधिकतम करने के साथ फसलों की गहनता बनाने के लिये भी सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किया जाये। जल संसाधनों से कृषि उत्तपादकता एवं उत्पादन में वृद्धि आद्योगिकिकरण एवं परिवहन को भी प्रोत्साहन मिलता है। जल संसाधन से विद्युत आपूर्ति एवं हरित क्रांति लाने एवं रोजगार में वृद्धि करने का महत्वपूर्ण साधन है।

त्मेमंतबी ज्मबीदपुनमरू.

इस रिर्सच पेपर में छ.ग. राज्य के संसाधनों से जल प्राकृतिक संसाधन का आर्थिक विकास में क्या योगदान है। इसको ज्ञात करना है, जो कि द्वितीयक संमको पर आधारित है।.

उद्देश्य :–

1) छत्तीसगढ़ राज्य में जल संसाधन का कृषि उत्पादन में वृद्धि को ज्ञात करना।

2) जल संसाधन से प्राप्त राजस्व वृद्धि को ज्ञात करना।

3) छत्तीसगढ़ राज्य में जल संसाधन विभाग द्वारा औद्योगिक जल प्रदाय की स्थिति ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ :–

1) जल संसाधन का कृषि उत्पादन में वृद्धि से सीधा संबंध है।

2) कृषि उत्पादकता में वृद्धि का आर्थिक विकास में महत्वर्पूण योगदान है।

3) जल संसाधन पेय जल की उचित व्यवस्था करता है।

4) जल संसाधन के प्रबंध से रोजगार में वृद्धि होती है।

व्याख्या :–

प्रस्तुत शोध विषय के माध्यम से हम यह ज्ञात करना चाहते है कि छत्तीसगढ़ राज्य में जल संसाधन की स्थिति क्या है। इससे बिजली उत्पादन, कृषि उत्पादकता, पेय जल, राजस्व में वृद्धि औद्योगिक विकास हेतु जल प्रदाय करना, इस की वास्तविक स्थिति को ज्ञात करना ।

तालिका–1

जल संसाधनः भारत एवं छत्तीसगढ़

जल संसाधन : भारत एवं छत्तीसगढ़

| | भारत | छत्तीसगढ़ | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| सतही जल | 18,69,000 मि.घन मी. | 48,296 मि.घन मी. | 2.58 |
| भू–जल | 4,35,420 मि.घन मी. | 11,630 मि.घन मी. | 2.67 |
| भौगोलिक क्षेत्र | 32,68,090 वर्ग कि.मी. | 1,37,900 वर्ग कि.मी. | 4.22 |
| जनसंख्या | 121 करोड़ | 2.55 करोड़ | 2.10 |

शासकीय नवीन महाविद्यालय खुर्सीपार, भिलाई, जिला-दुर्ग (छ.ग.)
PRINCIPAL
Mohan Lal Jain (Mohan Bhaiya)
Govt. College, Khursipar, Bhila
Pin 490011
Mohan Lal Jain (Mohan Bhaiya) Govt. College, Khursipar
BHILAI

तालिका 1 से ज्ञात है कि भारत की कुल जनसंख्या 2.10 प्रतिशत छत्तीसगढ़ का है। जिससे सतही जल 2.58 प्रतिशत, भू–जल 2.67 प्रतिशत, भौगोलिक क्षेत्र 4.22 प्रतिशत

तालिका–2

प्रदेश का भौगोलिक क्षेत्रफल

तालिका 2 से ज्ञात होता है कि प्रदेश का भौगोलिक 137.90 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में से कुल बोया क्षेत्र 55.40 लाख हेक्टेयर है।

तालिका–3

वर्ष 2021–22 के बजट प्रावधन एवं व्यय

वर्ष 2021–22 के बजट प्रावधान एवं व्यय की जानकारी

| स.क्र | विवरण | बजट प्रावधान वर्ष 2021–22 (रू. करोड़ में) | व्यय 01.04 से 28.06.2021 तक (रू. करोड़ में) |
|---|---|---|---|
| क | जल संसाधन विभाग | 2,866.50 | 340.23 |

तालिका 3 से ज्ञात होता है कि वर्ष 2021–22 में 2,866.50 करोड़ रू. बजट प्रावधान किया गाया है। और 340.23 करोड़ रू. व्यय किया गया है।

तालिका–4

निर्मित एवं निर्माणाधीन सिंचाई (01/04/2021 की स्थिति में)

निर्मित एवं निर्माणाधीन सिंचाई योजनाए (01.04.2021 की स्थिति में)

| स. क्र. | योजना का प्रकार | निर्मित योजनाओं की संख्या | निर्मित योजनाओं कीसृजित सिंचाई क्षमता (हेक्टेयर में) | निर्माणाधीन योजनाओं की संख्या | निर्माणाधीन योजनाओं की सृजित सिंचाई क्षमता (हेक्टेयर में) | कुल योजनाओं की संख्या | कुल योजनाओं की सृजित सिंचाई क्षमता (हेक्टेयर में) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | वृहद सिंचाई योजना | 8 | 10,18,806 | 4 | 80,948 | 12 | 10,99,754 |
| 2. | मध्यम सिंचाई योजना | 37 | 2,12,774 | 1 | 4,430 | 38 | 2,17,204 |
| 3. | लघु सिंचाई योजना | 2,455 | 6,25,398 | 350 | 68,142 | 2,805 | 6,93,540 |
| 4. | एनीकट | 760 | 89,917 | 178 | 11538 | 938 | 10,1455 |
| 5. | नलकूप लघु योजना | 30 | 22,125 | 1 | 400 | 31 | 22,525 |
| | योग :– | 3,290 | 19,69,020 | 534 | 1,65,458 | 3,824 | 21,34,478 |

निर्माणाधीन परियोजनाओं से सिंचाई क्षमता का सृजन

(1 अप्रेल 2021 की स्थिति में)

| स. क्र. | परियोजना का प्रकार | परियोजनाओं की संख्या | रूपांकित सिंचाई क्षमता (हेक्टेयर में) | | | सृजित सिंचाई क्षमता (हेक्टेयर में) | | | सृजन हेतु शेष सिंचाई क्षमता (हेक्टेयर में) | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | खरीफ | रबी | योग | खरीफ | रबी | योग | खरीफ | रबी | योग |
| 1 | वृहद | 4 | 1,42,614 | 0 | 1,42,614 | 80,948 | 0 | 80,948 | 61,666 | 0 | 61,666 |
| 2 | मध्यम | 1 | 4,970 | 1,300 | 6,270 | 3,130 | 1,300 | 4,430 | 1,840 | 0 | 1,840 |
| 3 | लघु | | | | | | | | | | |
| | i) सिंचाई | 350 | 1,62,413 | 24,832 | 1,87,245 | 58,321 | 9,821 | 68,142 | 1,04,092 | 15,011 | 1,19,103 |
| | ii) एनीकट | 178 | 22,382 | 3,278 | 25,660 | 10,530 | 1,008 | 11,538 | 11,852 | 2,270 | 14,122 |
| | iii) नलकूप | 1 | 1,280 | 0 | 1,280 | 400 | 0 | 400 | 880 | 0 | 880 |
| | कुल | 529 | 1,86,075 | 28,110 | 21,4,185 | 69,251 | 10,829 | 80,080 | 1,16,824 | 17,281 | 1,34,105 |
| | कुल योग | 534 | 3,33,659 | 29,410 | 3,63,069 | 1,53,329 | 12,129 | 1,65,458 | 1,80,330 | 17,281 | 1,97,611 |

तालिका 4 से ज्ञात होता है कि निर्मित एवं निर्माणाधीन सिंचाई योजनाए (01/04/2021 की स्थिति में) कुल योजनाए की सृजित सिंचाई क्षमता 21,34,478 हेक्टेयर हुआ है। और निर्माणाधीन परियोजनाओं से सिंचाई क्षमता का सृजन (01/04/2021 की स्थिति में) सृजन हेतु षेश सिंचाई क्षमता 1,97,611 हेक्टेयर हुआ है।

तालिका–5

छत्तीसगढ़ की विगत् 5 वित्तीय वर्षो में राजस्व प्राप्ति

## राजस्व प्राप्ति

विगत् 5 वित्तीय वर्षों में विभाग को प्राप्त राजस्व का विवरण निम्नानुसार है।

| वित्तीय वर्ष | राजस्व प्राप्ति (सकल) (रू. करोड़ में) | | राजस्व प्राप्ति (समायोजन द्वारा) (रू. करोड़ में) | कुल राजस्व प्राप्ति (रू. करोड़ में) |
|---|---|---|---|---|
| | जलकर राजस्व | औद्योगिक अग्रिम जल कर | | |
| 2016–17 | 594.94 | 27.88 | 19.44 | 642.26 |
| 2017–18 | 615.88 | 2.87 | 40.17 | 658.92 |
| 2018–19 | 679.50 | 14.06 | 12.77 | 706.33 |
| 2019–20 | 621.46 | 124.74 | 25.17 | 771.37 |
| 2020–21 | 696.67 | 3.78 | 26.23 | 726.68 |

विभाग द्वारा वर्ष 2020–21 में विभिन्न प्रयोजनों से दिनांक 31.03.2021 तक कुल रू. 726.68 करोड़ की राजस्व प्राप्ति की गई है।

तालिका 5 से ज्ञात होता है कि छत्तीसगढ़ राज्य के राजस्व प्राप्त 2016–17 में कुल प्राप्त 642.26 करोड़, 2017–18 में कुल प्राप्त 658.95 करोड, 2018–19 में कुल प्राप्त 706.33 करोड, 2019–20 में कुल प्राप्त 771.37 करोड, 2020–21 में कुल प्राप्त 726.68 करोड, प्राप्त हुआ।

तालिका–6

सिंचाई क्षमता में वृद्धि

राज्य गठन के पश्चात निर्मित सिंचाई क्षमता में उत्तरोत्तर वर्षवार वृद्धि हुई है। वर्षवार सिंचाई क्षमता में हुई वृद्धि निम्नानुसार है :–

| अवधि | निर्मित सिंचाई क्षमता (हे.में) | कुल निर्मित सिंचाई क्षमता (लाख हे.में) |
|---|---|---|
| 01 नवंबर 2000 | - | 13.28 |
| नवंबर 2000 से मार्च 2001 | 12000 | 13.40 |
| अप्रैल 2001 से मार्च 2002 | 71000 | 14.11 |
| अप्रैल 2002 से मार्च 2003 | 42000 | 14.53 |
| अप्रैल 2003 से मार्च 2004 | 98000 | 15.51 |
| अप्रैल 2004 से मार्च 2005 | 75000 | 16.26 |
| अप्रैल 2005 से मार्च 2006 | 55000 | 16.81 |
| अप्रैल 2006 से मार्च 2007 | 41000 | 17.22 |
| अप्रैल 2007 से मार्च 2008 | 36000 | 17.58 |
| अप्रैल 2008 से मार्च 2009 | 13700 | 17.717 |
| अप्रैल 2009 से मार्च 2010 | 17400 | 17.89 |
| अप्रैल 2010 से मार्च 2011 | 20000 | 18.09 |
| अप्रैल 2011 से मार्च 2012 | 35000 | 18.44 |
| अप्रैल 2012 से मार्च 2013 | 34000 | 18.78 |
| अप्रैल 2013 से मार्च 2014 | 26000 | 19.04 |
| अप्रैल 2014 से मार्च 2015 | 25000 | 19.29 |
| अप्रैल 2015 से मार्च 2016 | 22000 | 19.51 |
| अप्रैल 2016 से मार्च 2017 | 101000 | 20.52 |
| अप्रैल 2017 से मार्च 2018 | 26000 | 20.88 |
| अप्रैल 2018 से मार्च 2019 | 11000 | 20.99 |
| अप्रैल 2019 से मार्च 2020 | 22000 | 21.21 |
| अप्रैल 2020 से दिसम्बर 2020 तक) | 7000 | 21.28 |

तालिका 6 से ज्ञात होता है कि राज्य गठन के समय (01/11/2000) निर्मित सिंचाई क्षमता 12000 हेक्टेयर, कुल निर्मित सिंचाई क्षमता 13.28 लाख हेक्टेयर हुआ है। राज्य गठन के 20 वर्ष बाद (31/03/2020) मे निर्मित सिंचाई क्षमता 22000 हेक्टेयर, कुल निर्मित सिंचाई क्षमता 21.21 लाख हेक्टेयर हुआ है।

### निष्कर्ष :–

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि जल संसाधन से कृषि उत्पादन में वृद्धि संभव हो पाया है क्यों कि सिंचाई क्षमता में निरंतर वृद्धि हो रही है, जिससे वर्षा के जल पर निर्भरता नही है बल्कि सिंचाई के माध्यम से कृषि कार्य संभव हो पाया है। इसके अतिरिक्त विभीन्न औद्योगिक क्षेत्रों को जलप्रदय किया जा रहा है, अध्ययन से ज्ञात है कि जल संसाधन के द्वारा राज्य के राजस्व में भी वृद्धि हुई है। इसके साथ ही विद्युत आपूर्ति में भी वृद्धि हुई है। स्टापडेम, एनाक्रेट व जलाश्य निर्माण के द्वारा से आय एवं रोजगार में वृद्धि हुई है।, जिससे कि हमारी परिकल्पना सत्य है।

### सन्दर्भ ग्रंथ :–


(1) डॉ. जे.सी. पन्त एवं डॉ. जे.पी. मिश्रा
(2) मिश्र एवं भारद्वाज– सी.एस, जे.एल
(3) प्रशासकीय प्रतिवेदन 2020–21
(4) जल संसाधन विभाग–छत्तीसगढ़ षासन



सहा. प्राध्यापक
मोहन लाल जैन(मोहन भैय्या)
शासकीय महाविद्यालय खुर्सीपार, भिलाई, जिला–दुर्ग(छ.ग.)


□□